1857 के विद्रोह में बिहार का योगदान

1857 का विद्रोह औपनिवेशिक सत्ता के विरुद्ध स्वतंत्रता के लिए भारत के संघर्ष के दौरान पहला बड़ा विद्रोह था जिसने भारत में ब्रिटिश साम्राज्य को इसकी नींव तक हिला दिया। 10 मई, 1857 को मेरठ में विद्रोह शुरू हुआ और जल्द ही उत्तर में पंजाब और दक्षिण में नर्मदा से लेकर पूर्व में बिहार और पश्चिम में राजपूताना तक एक विशाल इलाके में फ़ैल गया।

बिहार विद्रोह के आरंभ का प्रमुख केंद्र था। बिहार में विद्रोह की घटना का पता देवघर के रोहिणी गाँव में लगाया जा सकता है जहाँ 12 जून, 1857 को सैनिकों ने विद्रोह करके दो अंग्रेज़ अधिकारियों की हत्या कर दी।

बिहार में विद्रोह का आरंभ:

3 जुलाई 1857 को पटना में, एक पुस्तक विक्रेता पीर अली ने अपने साथियों के साथ मिलकर पटना ओपीअम एजेंसी के डिप्टी ओपीअम एजेंट, डॉ. लियेल की हत्या कर दी। बाद में पीर अली को दोषी ठहराया गया और उन्हें 7 जुलाई, 1857 को फाँसी दे दी गई। विलियम टेलर पटना डिवीजन के कमिश्नर थे और उन्होंने पीर अली और उनके सहयोगियों के खिलाफ ऑपरेशन चलाया था।

पटना के उथल-पुथल के बाद, दानापुर में तीन रेजिमेंटें कंपनी के खिलाफ खड़ीं हों गईं। 26 जुलाई को वे जगदीशपुर के 80 वर्षीय कुंवर सिंह के कुशल नेतृत्व में ब्रिटिश प्रशासनिक अधिकार के खिलाफ एक संगठित आंदोलन में शामिल होने के लिए शाहाबाद जिले की ओर कूच कर गए।

कुंवर सिंह की भूमिका:

विद्रोह के दौरान कई जमींदार और स्थानीय नेता सरकार के साथ थे, जबकि अन्य ने विद्रोह में सक्रिय रूप से भाग लिया और उसके नेता बन गए। कुंवर सिंह उनमें से एक थे जिन्हें बिहार के लोगों द्वारा एक स्वाभाविक नेता के रूप में देखा जाता था। जगदीशपुर में अपनी मजबूत पकड़ से, उन्होंने हथियारों और गोला-बारूद की एक फैक्ट्री की स्थापना की थी और छह महीने के लिए 20,000 पुरुषों की सेना को खिलाने के लिए रसद को संग्रहित किया था।

कुंवर सिंह के मुख्य अनुयायी उनके भाई अमर सिंह, ऋत नारायण सिंह, उनके भतीजे निशान सिंह और जय कृष्ण सिंह और शाहाबाद के चार ज़मींदार थे। कुंवर सिंह के दल ने आरा में ब्रिटिश गैरीसन को घेर लिया। इस गंभीर स्थिति में 3 अगस्त को मेजर आइरे ने बीबीगंज में सेना को हराया। उसने जगदीशपुर पर कब्जा कर लिया, युद्ध सामग्री, इमारतों और यहाँ तक कि मंदिरों को नष्ट कर दिया। लेकिन कुंवर सिंह विचलित नहीं हुए।

byjusexamprep.com

कुंवर सिंह की गतिविधियाँ बिहार की सीमाएं पार कर गईं। उन्होंने भारत के अन्य भागों जैसे ग्वालियर, लखनऊ, आज़मगढ़, रेवा इत्यादि में कुछ प्रमुख नेताओं और विद्रोही सैनिकों से सहयोग करने की मांग की। अगस्त 1857 में बिहार छोड़कर, वह जगह-जगह से ब्रिटिश सैनिकों के खिलाफ लड़ते हुए चले गए। 1857 के सितम्बर में, कुंवर सिंह ने रीवा क्षेत्र में प्रवेश करने का प्रयास किया, लेकिन उनका लेफ्टिनेंट ऑस्बर्न द्वारा विरोध किया गया। ग्वालियर के सैनिकों में शामिल होने पर, उन्होंने कानपुर की लड़ाई में भाग लिया, नाना साहब और उनके सहयोगियों को हराया गया। इसके बाद कुंवर सिंह ने लखनऊ की ओर कूच किया, जहाँ उन्हें अवध के शाह द्वारा सम्मान की पोशाक आजमगढ़ जिले के लिए एक फ़रमान, बारह हज़ार रुपये नकद दिए गए। आज़मगढ़ से वह ग़ाज़ीपुर की ओर बढ़े। उनकी योजना तब गंगा को पार करने और जगदीशपुर पर फिर से अधिकार करने की थी।

21 अप्रैल 1858 को कुंवर सिंह ने ब्रिगेडियर डगलस के नेतृत्व वाले ब्रिटिश सैनिकों के खिलाफ बहादुरी से लड़ाई लड़ी। वह गंभीर रूप से घायल हो गए और उन्होंने अपना एक हाथ खो दिया। 23 अप्रैल 1858 को कुंवर सिंह जगदीशपुर में थे। कुंवर सिंह के खिलाफ कैप्टन ले ग्रैंड के नेतृत्व में जगदीशपुर की ओर भेजे गए एक ब्रिटिश बल की करारी हार हुई। थकान और निरंतर लड़ाई से थककर, ले ग्रैंड की सेना पर जीत के तीन दिन बाद उनकी मृत्यु हो गई। उसके बाद कुंवर सिंह के अनुयायियों ने उनके भाई अमर सिंह के नेतृत्व में बिहार के विभिन्न भागों में संघर्ष जारी रखा।

बिहार के अन्य क्षेत्रों में विद्रोह का प्रसार:

हज़ारीबाग: हज़ारीबाग में पैदल सेना की कंपनियों ने जुलाई 1857 के अंत में विद्रोह कर दिया। माधब सिंह उनके नेता थे। जल्द ही वे रांची चले गए। रांची में विद्रोही सिपाहियों ने जयमंगल सिंह के खिलाफ विद्रोह कर दिया।

पलामू: विद्रोह के दौरान चेरो जमींदारों के साथ गठबंधन में नीलांबर और पीतांबर के नेतृत्व ने पलामू को गंभीर लोकप्रिय आंदोलन का केंद्र बना दिया।

सिंहभूम: पोरहाट के राजा अर्जुन सिंह और उनके भाई ने सिंहभूम के कोलों के उग्र रूप का नेतृत्व किया।

इन घटनाओं के अलावा, गया में विद्रोह हुआ, जहाँ विद्रोही सैनिकों के साथ-साथ अप्रभावित ग्रामीणों ने भाग लिया।

1857 का विद्रोह भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान एक अभूतपूर्व घटना थी जिसमें बिहार के लोगों की भागीदारी को बड़े उत्साह के साथ देखा गया था जिसने बाद में समाज के विभिन्न वर्गों के बीच राष्ट्रीयता की भावना को बढ़ाया।

byjusexamprep.com